अक्रम यूथ

मई 2021 हिन्दी

दादा भगवान परिवार

अनुक्रमणिका

04 कवर स्टोरी

07 ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि

08 Youth Voice

10 कम्पलेन या क्युरियोसिटी

12 मैं और वैज्ञानिक

14 महान पुरुषों की झाँकी

15 पूछो सच्चे मार्गदर्शक से

16 Why मी?

17 अनुभव

18 फन विथ फ्रेन्ड

20 दादाश्री के पुस्तक की झलक

23 #कविता

मई 2021
वर्ष : 9, अंक : 1
अखंड क्रमांक : 97

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

मित्रों,

हमें जीवन में कदम-कदम पर अलग-अलग तरह के प्रश्न होते ही रहते हैं। प्रश्नों का होना और उनका समाधान प्राप्त करना कुछ गलत नहीं है। यदि वैज्ञानिकों को प्रश्न नहीं हुए होते और वे उनका जवाब ढूँढने के प्रयास नहीं किए होते तो शायद भौतिक विज्ञान में इतनी खोज भी देखने को नहीं मिलती। सभी चीज़ें जो कि आज हमारे जीवन का एक हिस्सा बन गई हैं, जैसे कि मोबाइल, इन्टरनेट, टी.वी. कार, बाइक वगैरह की खोज की जड़ में "प्रश्न" ही थे और उसके जवाब के रूप में इन सभी भौतिक साधनों का इन्वेन्ट किया गया।

आध्यात्मिक विज्ञान में भी साधक को होने वाले प्रश्न ही उनकी प्रगति की मुख्य वजह बनते हैं। जगत् कौन चलाता है? संसारियों का और स्त्रियों का मोक्ष क्यों नहीं हो सकता? यदि दादाश्री को ऐसे प्रश्न नहीं हुए होते तो शायद इतना अद्भुत अक्रम विज्ञान भी प्रकट नहीं हुआ होता!

जीवन में साधारतः क्या, क्यों कब, कैसे, ऐसे प्रश्नों के जवाब प्राप्त करने के लिए हम प्रयत्न करते रहते हैं लेकिन प्रश्न किसलिए पूछे, कैसे पूछे, किससे पूछे, किस तरह से पूछे और उसमें कहीं विवेक न चुक जाएँ, इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

प्रस्तुत अंक में मुख्यतः "क्यों?" - एक ऐसा सामान्य प्रश्न, जो हमारा कभी पीछा ही नहीं छोड़ता है। इसके बारे में बहुत ही सूक्ष्मता से बात की गई है। "क्यों?" प्रश्न पूछने का हेतु, उसके फायदे और नुकसान, "क्यों?" प्रश्न का महत्व वगैरह की अलग-अलग बातें की गई हैं। इसके अलावा इस अंक में प्रश्न पूछने से जुड़ा हुआ विस्तृत मार्गदर्शन भी इसमें दिया गया है जो आपके लिए बहुत उपयोग साबित होगा, इसी उम्मीद के साथ...

- डिम्पल महेता

प्रश्न पूछने का महत्व

अर्जुन और आदित्य बचपन से ही बेस्ट फ्रेन्ड थे। बचपन से ही आदित्य को नई चीज़ें सीखने का और वे कैसे बनती हैं, कैसे चलती हैं, ऐसा सब जानने में बहुत ही इन्टरेस्ट था। अर्जुन भी बहुत होशियार था। दोनों ने एक ही कॉलेज में कम्प्यूटर इंजीनियरींग ब्रांच में एडिमशन लिया।

एक दिन, कम्प्यूटर लैब में प्रोफेसर कम्प्यूटर प्रोग्राम प्रैक्टिकली लिखना सीखा रहे थे। प्रैक्टिकल समझने के बाद सभी स्टूडेन्ट्स प्रोग्राम का कोड टाइप करने लगे। आदित्य, अर्जुन पास बैठे थे और दोनों ने मिलकर एक ही कोड टाइप किया। आदित्य ने प्रोग्राम रन करके चेक किया। अर्जुन का कोड ठीक से रन हुआ, लेकिन आदित्य के प्रोग्राम में एरर आया। तब आदित्य ने अर्जुन से पूछा "अर्जुन, एक ही जैसा कोड होने पर भी मेरे प्रोग्राम में एरर क्यों आया?"

अर्जुन ने कहा, "आदित्य, तू एक बार रीचेक कर ले, शायद कोई मिस्टेक होगी।"

आदित्य को प्रोग्राम रीचेक करने पर भी गलती नज़र नहीं आई। कुछ देर बाद प्रोफेसर एक के बाद एक सभी के पास जाकर उनका रीज़ल्ट चेक करने लगे। आदित्य ने सर से एरर आने का कारण पूछा।

कोड रन करके उसमें एरर देखकर प्रोफेसर ने आदित्य से कहा, "मैं तुझे एरर नहीं बताऊँगा। तू खुद यह एरर पढ़कर समझने की कोशिश कर, फिर मुझे बता कि, इसका क्या कारण है?"

आदित्य ने गुगल पर कोड का एक-एक शब्द चेक किया और पता चल गया कि सिर्फ एक जगह पर ज्यादा स्पेस दे देने के कारण एरर आया था।

आदित्य ने खुश होकर प्रोफेसर से कहा, "सर, मिल गया। एक्स्ट्रा स्पेस के कारण एरर आया है। लेकिन मेरा प्रश्न यह है कि स्पेस में तो कोई कैरेक्टर नही है तब भी उसके कारण एरर क्यों आया?"

प्रोफेसर ने कहा, "कम्प्यूटर यानी मशीन। उसके लिए स्पेस भी एक कैरेक्टर जैसा ही है, जिसका स्पेशल कोड भी होता है। यदि एक स्पेस भी ज्यादा हो जाए तो उसका कोड तुम्हारे प्रोग्राम में जुड़ जाएगा और वहाँ पर मिस-मैच होने की वजह से एरर आता है।"

इतना कहकर प्रोफेसर आगे चले गए, लेकिन आदित्य के प्रश्न पूरे नहीं हुए इसलिए वह अर्जुन से पूछने लगा।

सर, मिल गया। एक्स्ट्रा स्पेस के कारण एरर आया है। लेकिन मेरा प्रश्न यह है कि स्पेस में तो कोई कैरेक्टर नही है

आदित्य : क्या इस प्रोग्राम को किसी और तरह से रन कर सकते हैं? अर्जुन ने ऊब कर कहा कि, "क्या, तू भी! तुझे हर जगह यह क्यों, ऐसा क्यों, सवाल होते ही रहते हैं। अरे भाई, तू बोर नहीं हो जाता?"

आदित्य : "नहीं, मुझे तो बहुत अच्छा लगता है और मैं इसका जवाब ढूँढ कर ही रहूँगा।"

इतना कहकर आदित्य कम्प्यूटर लैब के प्रोफेसर के पास गया। प्रोफेसर ने आदित्य को अन्य कई बुक्स और वेबसाइट के रेफरेन्स भी दिए।

आदित्य और अर्जुन कॉलेज के दिन पूरे किए, सब अपना-अपना करियर बनाने में लग गए। कई सालों बाद एक बार कॉलेज में रीयुनियन फंक्शन रखा गया। इस फंक्शन में कॉलेज के सभी विद्यार्थियों को और उनके पेरेन्ट्स को भी आमंत्रित किया गया था। फंक्शन के चीफ गेस्ट का परिचय देते हुए कॉलेज के प्रिन्सिपल ने कहा कि, "आज हमने एक ऐसे व्यक्ति को चीफ गेस्ट के तौर पर आमंत्रित किया है, जिन्होंने कम उम्र में ही कम्प्यूटर की दुनिया में बहुत नाम कमाया है, और हमारे कॉलेज का नाम रौशन किया है।"

यह सुनकर सब को लगा कि हमारे ही कॉलेज से कौन हो सकता है? तभी प्रिन्सिपल ने कहा, "स्वागत करते हैं, आपके ही सीनियर, हमारे कॉलेज के सब से टैलेन्टेड स्टूडेन्ट और वर्ल्ड के टॉप टेन सक्सेसफूल सॉफ्टवेर स्टार्टअप में से एक कंपनी के मालिक, मिस्टर आदित्य चौधरी का!"

यह सुनते ही सभी चकित रह गए। वहाँ आदित्य का क्लासमेट अर्जुन भी था। उसे यकिन नहीं हो रहा था कि उसका बेस्ट फ्रेंन्ड इतना बड़ा व्यक्ति बन गया !

प्रिन्सिपल ने आदित्य का सम्मान करते हुए पूछा, "तो आदित्य, हम क्या आपके इस सफलता का कारण जान सकते हैं?"

आदित्य ने सविनय प्रिन्सिपल सर का आभार व्यक्त किया और स्टूडेन्ट्स की ओर देखकर कहा, "मेरी इस सफलता का कारण है, मेरे प्रश्न।"

यह सुनकर अर्जुन को बीते दिन याद आ गए जब आदित्य छोटी-छोटी चीज़ों पर भी प्रश्न पूछता और उनके जवाब ढूँढा करता था। अर्जुन को लगा, क्या प्रश्न पूछना इतना महत्वपूर्ण है? प्रश्न पूछना इतना मूल्यवान है?

तो चलिए समझें, ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से...

अंतिम स्टेशन की बातें

संपूर्ण गीता प्रश्नोत्तरी की तरह है। अर्जुन ने प्रश्न पूछे और कृष्ण भगवान ने जवाब दिए हैं। कृष्ण भगवान ने गीता में प्रवचन नहीं दिया है। पूछे गए प्रश्नों के जवाब ही दिए हैं। प्रवचन करेंगे ही नहीं न! अंतिम विज्ञान व्याख्यान (प्रवचन) की तरह नहीं होता। प्रश्नोत्तरी के रूप में होता है। अर्जुन को अंत में जो संदेह हुआ, उन्हें शंका हुई, उसी के जवाब दिए हैं, बस। उसे धर्म कहते हैं। गीता 'परिप्रश्नेन' है। परिप्रश्नेन यानी अर्जुन ने प्रश्न पूछे और कृष्ण भगवान ने जवाब दिए। संपूर्ण गीता का यही सार है।

यानी कि कृष्ण भगवान ने क्या कहा? परिप्रश्न यानी प्रश्न पूछकर अंतिम स्टेशन तक पहुँचना। बाकी प्रश्न पूछे बगैर अंतिम स्टेशन तक नहीं पहुँच सकते। महावीर भगवान ने भी प्रश्नोत्तरी के रूप में ही कहा है। भगवान महावीर और गौतम स्वामी, उनका वार्तालाप भी प्रश्नोत्तरी के रूप में ही था! गौतम स्वामी और ये सभी ग्यारह गणधर पूछते रहते और महावीर भगवान जवाब देते। उन गणधरों ने जो पूछा, उसी पर महावीर भगवान का पूरा शास्त्र लिखा गया है।

प्रश्नकर्ता : हमें ये जो रोज़ प्रश्न खड़े होते हैं वे पूरी ज़िंदगी आते ही रहेंगे?

दादाश्री : नहीं-नहीं। यह ज्ञान लेने के बाद सभी प्रश्नों का एन्ड आ जाएगा। फिर प्रश्न ही नहीं खड़े होंगे। उसके बाद परेशानी ही कहाँ रही? आप सभी प्रश्नों के ज्ञाता बन जाओ। फिर पूछना रहा ही कहाँ? और सिर्फ यहीं पर प्रश्नोत्तरी के रूप में हैं ये सब। हमने यह कैसा ज्ञान दिया है? प्रश्न ही खड़े नहीं होते न!

Youth Voice

आज के यूथ को "क्यों" वाले प्रश्न कहाँ-कहाँ होते हैं, यह जानने के लिए हमने एक सर्वे किया। उस सर्वे के अनुसार यूथ को ज्यादातर जो प्रश्न होते हैं, उन्हें ज्यों का त्यों यहाँ बताया गया है।

Anonymous @anonymous01
गलती किसी और की थी तो मुझे ही क्यों कहा?

Anonymous @anonymous03
ऐसा मेरे साथ ही क्यों हुआ?

Anonymous @anonymous02
मेरे साथ ही इतनी बूरी तरह से बात क्यों करते हैं?

Anonymous @anonymous04
मेरी इच्छा नहीं होने पर भी मैं दूसरों की बातों की असर में आकर दुःखी क्यों हो जाता हूँ?

Anonymous @anonymous05
मैं क्यों लोगों को पहचान नहीं पाता/पाती?

Anonymous @anonymous07
मैं क्यों इतना ज्यादा सोचता हूँ?

Anonymous @anonymous06
लोग अंधश्रद्धा में क्यों जी रहे हैं?

Anonymous @anonymous08
संस्कृतियाँ अलग-अलग क्यों होती हैं?

Anonymous @anonymous10
क्यों सिर्फ मुझे ही पैसों का प्रॉब्लम है?

Anonymous @anonymous11
मेरी फैमिली मेरे फ्रेन्डस की फैमिली जैसी क्यों नहीं है?

Anonymous @anonymous14
मैं क्यों एग्ज़ाम पास नहीं कर पा रही हूँ?

Anonymous @anonymous09
हर बार मुझे ही क्यों झुकना पड़ता है?

Anonymous @anonymous15
क्यों दूसरों को ही पहले चान्स मिलता है, मुझे क्यों नहीं?

Anonymous @anonymous12
मैं इसकी तरह हार्डवर्क क्यों नहीं कर पाती/पाता?

Anonymous @anonymous13
क्यों मेरी किस्मत अच्छी नहीं है?

Anonymous @anonymous17
मैं जो चाहता हूँ, वह मुझे क्यों नहीं मिलता?

Anonymous @anonymous16
मम्मी-पापा partiality(भेदभाव) क्यों करते हैं?

Anonymous @anonymous18
मैं ऐसा क्यों दिखता हूँ?

कम्पलेन या क्युरियोसिटी

मित्रों, आपको भी **"क्यों?"** वाले प्रश्न तो होते ही होंगे। तो चलिए, हम उस पर एक एक्टिविटी करें।

1. उसके लिए हमें चाहिए - पेपर, पेन और हाइलाइटर।

2. अब, बचपन से लेकर अब तक जो भी प्रश्न (क्यों/किसलिए) हुए हैं, उन प्रश्नों को लिखना है।

3. अब, लिखे गए सभी प्रश्नों के दो हिस्से करेंगे।

1. complain (शिकायत)
2. curiosity (जिज्ञासावृत्ति)

जिसका उदाहरण नीचे दिए गए टेबल में हैं। आप दो अलग-अलग हाइलाइटर से प्रश्नों को मार्क कर सकते हैं।

4. अंत में, चलिए काउन्ट करें कि complain के कितने प्रश्न हैं और curiosity के कितने प्रश्न हैं।

Complain (शिकायत)

जब हमारी पसंद के अनुसार न हो तब होने वाले प्रश्नों को complain कहा जाता है।

- करीबी लोग हमारा अच्छा क्यों नहीं देख सकते?
- मुझे ही क्यों कोई समझ नहीं पाता?
- पूरी मेहनत करने पर भी क्यों औरों को क्रेडिट मिलता है?
- हर बार मैं ही क्यों जाने दूँ?
- मैं अच्छा करना चाहता हूँ फिर भी मुझसे गलती क्यों हो जाती है?

Curiosity (जिज्ञासावृत्ति)

जब कुछ भी जानने की तीव्र इच्छा हो तब होने वाले प्रश्नों को curiosity कहा जाता है।

- यह दुनिया किसने बनाई होगी? जीवन कैसे शुरू हुआ होगा?
- कोई गरीब है तो कोई अमीर, ऐसा क्यों?
- लाखों लोग बाढ़ में डूब गए। लोगों का एक साथ वहाँ जाना कैसे हुआ होगा?
- इन्द्रधनुष में सात रंग ही क्यों होते हैं?
- मुसलमानों में शव (मुर्दे को) दफनाते हैं और हिन्दुओं में जलाते हैं, ऐसा क्यों?

मैं और

अरे वाह! सेब। चलो, खाएँ।

पेड़ के नीचे नहीं बैठना चाहिए! इतना बड़ा फल यदि हमारे सिर पर गिर जाए तो?

एक ही सेब गिरा! चलो, एक और गिराता हूँ।

सड़ा हुआ है। इसीलिए गिर गया।

अरे यार! कितना दूर जा गिरा... मुझे उठ कर लेने जाना पड़ेगा।

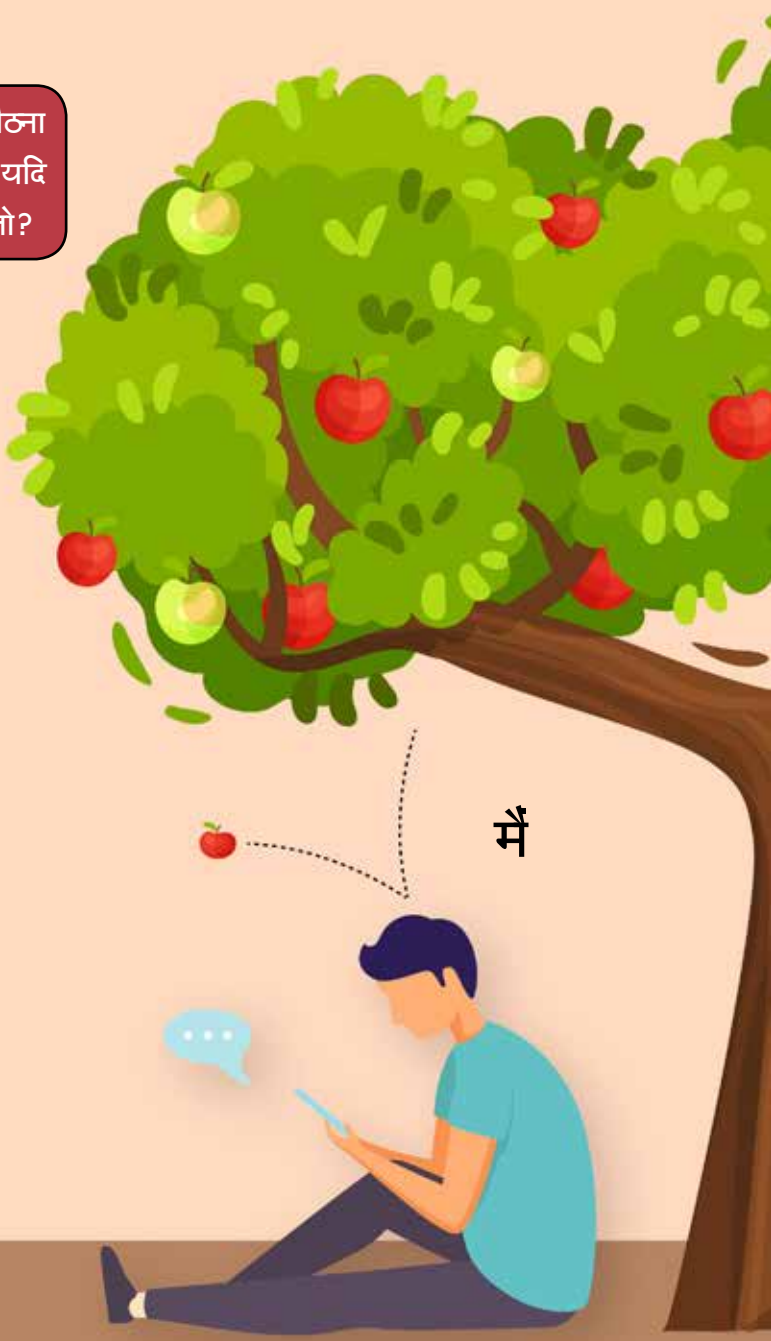

वैज्ञानिक

यह सेब नीचे क्यों गिरा? ऊपर क्यों नहीं गया?
चंद्रमा नीचे क्यों नहीं गिरता?
इसके जैसे और कितनी चीज़ें होंगी जो नीचे ही गिरती हैं?
क्या इस ज़मीन में कुछ ऐसा है जो चीज़ें को नीचे खिंचती है?
क्या सभी चीज़ों को गिरने में समान समय लगता होगा?
वैज्ञानिक

महान पुरुषों की झाँकी

गौतम बुद्ध

गौतम बुद्ध कपिलवस्तु नगरी के राजकुमार थे। उनका नाम सिद्धार्थ था। गौतम बुद्ध के पिता उन्हें दुःख, मृत्यु और अन्याय ऐसी सभी समस्याओं की चिंता से दूर रखा था और सिर्फ सुख देख सके, ऐसी सुख-सुविधा वाला महल बनवाया था। उन्हें उस महल से बाहर जाने की इज़ाज़त नहीं थी।

जब सिद्धार्थ बड़े हुए तब, एक बार वे उनके सारथी के साथ नगर में टहलने निकले। रास्ते में एक वृद्ध व्यक्ति को देखकर सिद्धार्थ ने अपने सारथी से पूछा कि, "यह कौन है?" तब उनके सारथी ने कहा कि "यह वृद्ध व्यक्ति है। एक दिन हम लोग भी वृद्ध हो जाएँगे।" फिर कुछ दूर जाने के बाद एक रोगी व्यक्ति को देखकर सिद्धार्थ ने फिर से सारथी से पूछा कि, "यह इतना कमज़ोर क्यों है?" तब सारथी ने कहा कि, "उसे रोग हुआ है, रोग के दर्द को वह सहन नहीं कर पा रहा है इसलिए कमज़ोर हो गया है।" थोड़ा आगे बढ़े तो देखा कि लोग एक मुर्दे को ले जा रहे थे और उसके पीछे लोग रोते हुए जा रहे थे। यह देखकर सिद्धार्थ का मन विचलित हो गया और उसके सारथी से पूछा कि, "ये सब क्यों रो रहे हैं और ये लोग क्या लेकर जा रहे हैं?" सारथी ने कहा कि, "कुमार, उनके स्वजन की मृत्यु होने के कारण ये लोग रो रहे हैं और मृत शरीर को जलाने के लिए ले जा रहे हैं। इस दुनिया में जो जन्म लेता है, उसकी मृत्यु भी होती है।"

कुछ दूर जाकर सिद्धार्थ एक संन्यासी को प्रसन्न मुद्रा में पेड़ के नीचे बैठा हुआ देखते हैं। वे फिर से सारथी से पूछते हैं कि, "इनकी प्रसन्नता का क्या कारण है?" सारथी ने कहा, "जो भी सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उसे कोई भी चीज़ दुःखी नहीं कर सकती।" जिन्होंने जीवन में कभी भी दुःख देखा तो क्या, नाम तक सुना नहीं था, सिद्धार्थ इन दृश्य को देखने के बाद, बहुत सोचने लगे और निष्कर्ष निकाला कि **'जो सुख मैं दुनिया में (बाहर) ढूँढ रहा था, वह सुख तो अंदर है।'** इससे प्रेरित होकर कठोर तप करके सिद्धार्थ बुद्धत्व ज्ञान प्राप्त कर सके और कई लोगों को प्राप्त भी करवा सके।

मित्रों, गौतम बुद्ध अपने मन में उठे प्रश्नों का समाधान प्राप्त करके लोगों का कल्याण इसलिए कर सके क्योंकि उनके प्रश्न सही दिशा के थे और यदि प्रश्न सही दिशा के होंगे तो ही प्रगति हो सकती है।

पूछो सच्चे मार्गदर्शक से

सत्संग में एक बार नीरू माँ ने कहा था कि, 'आप उत्तर दिशा की ओर जाना चाहते हैं, दिल्ली जाना चाहते हैं लेकिन यदि आप दक्षिण की ओर, मद्रास की ओर चलते रहेंगे और ढूँढेंगे कि अभी तक दिल्ली क्यों नहीं पहुँचे? अभी तक दिल्ली क्यों नहीं आया, तो इसमें गलती किसकी है? खुद की ही। क्यों? हमें समझने की ज़रूरत है। हमारी गलती है कि हमें पता ही चलता नहीं है कि हम कौन सी दिशा में जा रहे हैं। यदि हमें पता नहीं है तो हम किसी से पूछ सकते हैं, किसी सही गाइड से। कई बार ऐसा होता है कि जिससे पूछते हैं, उसे ही पता नहीं होता। वह कहता है कि, "मैं ही ढूँढ रहा हूँ न! तो फिर हम और परेशान हो जाते हैं।"

लेकिन नीरू माँ ऐसा भी कहते हैं कि, "पूछे बगैर तो नहीं चलेगा। मार्गदर्शक तो ढूँढना ही पड़ेगा। यानी कोई सही मार्गदर्शक मिल जाए और **जब हमारे मन का समाधान हो जाए, बुद्धि शांत हो जाए तब फिर हमें उस ओर आगे बढ़ना चाहिए।** उस गाइडेन्स के अनुसार चलेंगे तो हमें कहीं कुछ लक्ष्य दिखाई देगा। मार्ग के माइलस्टोन हमें दिखाई देंगे।"

अर्थर एश

Why मी ?

अर्थर एश एक जाने माने टेनिस प्लेयर थे। सन् 1975 में उन्होंने विम्बल्डन कप जीता, उसके बाद वे बहुत प्रसिद्ध हो गए। वे स्वभाव से भी बहुत अच्छे व्यक्ति थे। ब्लड ट्रान्सफ्यूज़न के समय उन्हें एड्स रोग हो गया। यह सुनकर उनके चाहने वालों को बहुत दुःख हुआ।

उनके एक अच्छे दोस्त को भी यह बात सुनकर बहुत दुःख हुआ। उन्होंने अर्थर एश से कहा कि, 'ऐसा करके भगवान ने तेरे साथ अन्याय किया है।' तब सर अर्थर एश ने बहुत अच्छा जवाब दिया।

उन्होंने कहा कि, "पूरी दुनिया में पचास करोड़ बच्चे टेनिस खेलना शुरू करते हैं, उनमें से पाँच लाख टेनिस को अपना प्रोफेशन बनाते हैं, उनमें से पचास हज़ार टेनिस प्लेयर सर्किट तक पहुँचते हैं। उनमें से पाँच हज़ार ग्रान्ड स्लाम तक पहुँचते हैं और मुश्किल से सिर्फ पचास लोग विम्बल्डन तक पहुँचते हैं। उनमें से भी चार सेमी फाइनल में और सिर्फ दो ही फाइनल में पहुँचते हैं। और उन आखिरी दो व्यक्तियों में से मैं अकेला ही ऐसा हूँ, जिसके हाथों में टेनिस की दुनिया का श्रेष्ठ पुरस्कार कप है। इसके बावजूद भी आई नेवर आस्कड गॉड - 'वाय मी?' मैंने भगवान से कभी नहीं पूछा कि, 'भगवान, पचास करोड़ टेनिस प्लेयर में से सिर्फ मेरे ही हाथों में यह कप क्यों? इस सफलता का श्रेय मुझे ही क्यों? तो फिर आज जब मुझे यह दुःख है तो मैं भगवान से शिकायत कैसे कर सकता हूँ कि, 'मुझे ही क्यों'?"

जो मिला है, उसमें खुश रहें और जो नहीं मिला, उसकी शिकायत न करें तो जीवन कितना सुखमय रहेगा।

अनुभव

मेरा नाम सुभाष है। गाँव से शहर में आने के बाद मैंने अपने परिवार के सदस्यों को शहर बुलाकर काम में सेट कर दिया। जब उन्हें पैसों की ज़रूरत थी तब उन्हें पैसों से भी मदद की। मुझसे जितनी हो पाई मैंने उतनी मदद की।

मेरे परिवार के सदस्य धीरे-धीरे व्यापार में बढ़िया प्रोग्रेस करने लगे और मेरा व्यापार भी बहुत अच्छा चल रहा था। लेकिन हमारा प्रोग्रेस देखकर परिवार के कुछ व्यक्तियों को ईर्ष्या होने लगी। मैं उनसे आगे न निकल जाऊँ इसलिए वे मुझे नीचा दिखाने का प्रयत्न करते थे।

एक दिन मैं सोचने लगा कि मैंने अपने परिवार के लोगों को आगे बढ़ाने में कितनी मदद की, फिर भी ये लोग मेरा ही बुरा चाहते हैं। इतनी मदद करने के बावजूद भी मेरे ही साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं? ऐसे प्रश्न मन में चुभने लगे। कहीं से भी जवाब नहीं मिल रहा था इसलिए मेरा मन अशांत था। मन में यही प्रश्न आता रहता था कि, "मेरे साथ ही ऐसा क्यों?"

मैं किसी को यदि मेरे प्रॉब्लम के बारे में बताता हूँ तो वे मुझे कहते है कि, "मदद करने से पहले तुझे सोचना चाहिए था न?" और कई लोग आश्वासन भी देते थे कि, "जो हो गया उसे तो बदल नहीं सकते, उनके साथ हिसाब पूरा हुआ, ऐसा समझकर तू जीवन में आगे बढ़।" लेकिन इससे मुझे कुछ ही देर तक शांति मिलती उसके बाद फिर से बेचैनी और अशांति।

मेरी परिस्थिति समझने वाले मेरे एक मित्र ने मेरा एक अद्भुत आत्मज्ञानी से परिचय करवाया। मैंने टी.वी पर नीरू माँ का सत्संग देखना शुरू किए और दादाश्री की पुस्तकें "भूगते उसकी भूल", "हुआ सो न्याय" वगैरह पढ़ी। नीरू माँ के सत्संग के टच से मुझे पता चला कि पिछले जन्म के ऋणानुबंध के आधार पर ये सारे परिवारजन इस जन्म में मेरे संपर्क में आए हैं। पिछले जन्म के उसके साथ के जो भी हिसाब थे, वे सारे अब पूरे हो गए। सत्संग में नीरू माँ ने कहा था कि, "प्रतिक्रमण करके छूट जाना चाहिए।" यह वाक्य मेरे दिल में बैठ गया। उन व्यक्तियों के शुद्धात्मा से माफी माँगकर, मैंने दिल से प्रति-क्रमण करना शुरू किया। बस, तब से लेकर अब तक, "मेरे ही साथ ऐसा क्यों?" यह प्रश्न हमेशा के लिए खत्म हो गया।

फन विथ फ्रेन्ड

गौरव और उसका फ्रेन्ड वीर, दोनों भाटिया हाउस में फोन खरीदने जाते हैं और विवो का मोबाइल पसंद किया। दोनों शॉप के बाहर एक पेड़ के नीचे बैठते हैं।

वीर : अरे दोस्त... तुझे तो आइफोन लेना था न?

गौरव : यार, लेना तो आइफोन ही था लेकिन पेरेन्ट्स ने मना कर दिया।

वीर : अच्छा... लेकिन तूने विवो का ही मोबाइल क्यों खरीदा? दूसरा क्यों नहीं?

गौरव : मुझे विवो का मोबाइल पसंद है इसलिए।

वीर : यही फोन क्यों पसंद आया? तुझे और कोई पसंद नहीं आया?

गौरव : अरे यार, एन्ड्रोइड में विवो मेरा फैवरेट फोन है इसलिए...

वीर : ओह... लेकिन तुने ब्लैक कलर ही क्यों लिया? और भी अच्छे कलर हैं न...

गौरव : हे भगवान! मुझे ब्लैक कलर ज्यादा पसंद है।

वीर : मोबाइल ब्लैक लिया लेकिन कवर ब्लैक कलर का नहीं लेना चाहिए न? तुने कवर किसी और कलर का क्यों नहीं लिया?

गौरव : ओह गॉड! मैं फोन लेने की खुशी मनाने तेरे पास क्यों आया! इससे तो अच्छा होता कि मैं आता ही नहीं! अब एक भी सवाल किया तो...

वीर के दूसरे मित्र, कैमरा लेकर बाहर आते हैं और गौरव का गुस्से वाला चेहरा व्यूअर्स को दिखाते हैं।

वीर : "फन विथ फ्रेन्ड" के इस फ्रेन्ड ग्रुप में आज तुम बकरा बने हो!!

मित्रों आप भी अपने फ्रेन्ड्स को ऐसे बेकार के प्रश्न पूछकर पका सकते हैं या फिर ऐसा प्रश्न जिसका कोई मतलब न हो... सिर्फ सामने वाले का दिमाग़ खराब होता हो। और आपके "फन विथ फ्रेन्ड" भेज सकते हैं हमारे इमेल पर।

akramyouth@dadabhagwan.org

दादाश्री के पुस्तक की झलक

पहले खुलासा चाहिए!

दादाश्री : हमारे घर की बिजली चली जाए तो हम कैन्डल जलाते हैं, लेकिन क्या बिजली आते ही कैन्डल बुझा नहीं देते? मतलब, मुझे (दादाश्री) क्या ज़रूरत उस कैन्डल की? अरे... फूल प्रकाश! सारे संसार की सभी चीज़ें दिखाई दें और लाखों प्रश्न पूछे जाते हैं और उन प्रश्नों के एग्ज़ैक्ट जवाब निकलते हैं। हमसे क्या कम प्रश्न पूछे गए होंगे?

प्रश्नकर्ता : बहुत पूछे होंगे।

दादाश्री : एक जगह पंद्रह सौ से दो हज़ार लोग जमा हुए थे, उसमें प्रश्नों की झड़ी बरसने लगी। मैंने छूट दे रखी थी। मैंने कहा था कि खुले दिल से जिसे जो प्रश्न पूछने हों पूछिए। दो-तीन दिनों तक बहुत प्रश्न पूछे गए। आज वे लोग मुझसे मिलते हैं और दर्शन करने आते हैं। मैं उनसे पूछता हूँ, 'आपने ज्ञान लिया है?' तब वे कहते हैं, 'नहीं लिया, ज्ञान अभी लेना है। लेकिन बिना ज्ञान लिए ही आपकी बात हमें परिणाम में आ गई है।' मैंने पूछा, 'क्या पाया?' तब वे कहते हैं, 'हमने जो प्रश्न किए थे, उसका खुलासा हुआ, वे खुलासे ही काम कर रहे हैं। हमें अंदर बहुत शांति रहती है। अन्य किसी चीज़ की हमें ज़रूरत नहीं है। क्योंकि कहीं पर भी हमें ऐसे खुलासे मिले नहीं थे। जो खुलासा चाहते थे, वह कोई कर नहीं सका था।' ऐसा हो सकता है या नहीं?

हमने जो प्रश्न किए थे, उसका खुलासा हुआ, वे खुलासे ही काम कर रहे हैं। हमें अंदर बहुत शांति रहती है।

यहाँ पर सारे वर्ल्ड का साइन्स है, तमाम शास्त्रों का साइन्स है। सारे जगत् के सभी शास्त्रों का खुलासा आपको यहाँ मिलेगा। अकेला वेदांत नहीं, अकेली भगवत् गीता नहीं, लेकिन मुसलमानों के, जैनों के, सभी के शास्त्रों का खुलासा एक साथ होने पर सही बात का पता चलता है। यदि हाथी के किसी एक हिस्से का वर्णन हो तो उसे हाथी नहीं कह सकते। सभी हिस्सों का वर्णन हो तभी हाथी कह सकते हैं। और संसार व्यवहार के चाहे कैसे भी प्रश्न हो, उसका खुलासा तो हो ही जाता है। और जब खुलासा हो जाए तब अपना मन स्थिर हो जाता है, फिर मन परेशान नहीं करता है।, वर्ना यह मन तो निरा पज़ल खड़े करता है।

satsang.dadabhagwan.org

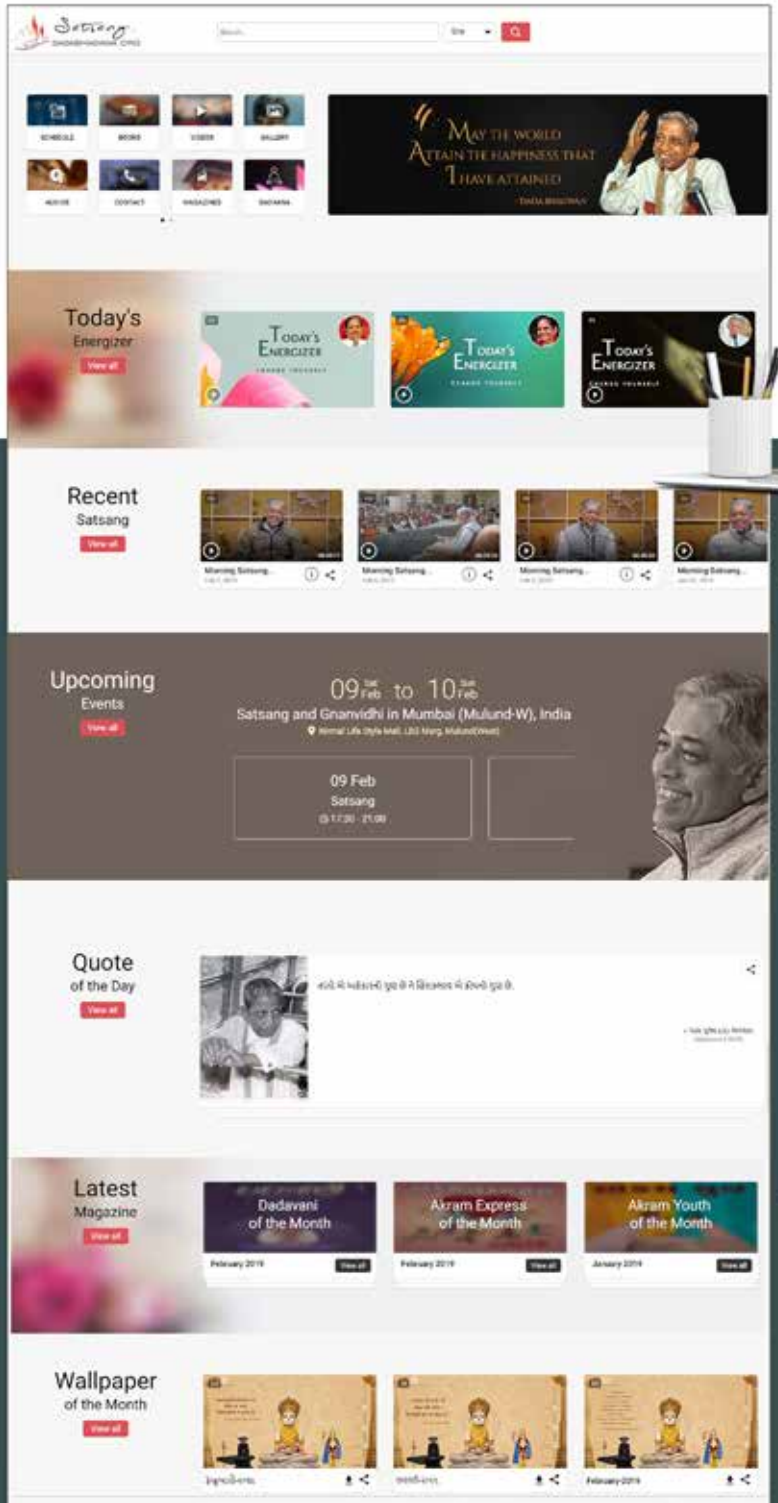

Dadabhagwan app

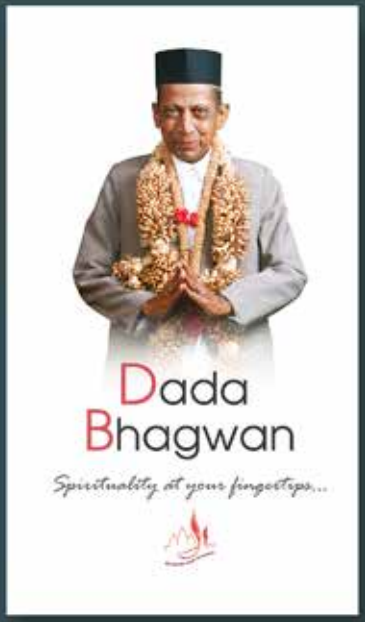

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

#कविता

'किसलिए?', 'ऐसा क्यों?' सोचकर मैं ऐसा घबरा गया;
प्रश्नों के समाधान प्राप्त करने में, खुद ही प्रश्नों में उलझ गया!

प्रश्नों में शिकायत थी, अच्छा न लगता मुझे कुछ;
प्रश्नों में जिज्ञासा जगी, मिल न पाया मुझे कुछ!

फिर ऐसा आभास हुआ, प्रश्नों द्वारा ही है प्रगति;
योग्य सवाल के जवाब द्वारा, कर सकते हैं उन्नति!

ऊटपटाँग उन प्रश्नों में पाया, हमने 'झरना खोज का';
'न्यूटन हो या बुद्ध', आए लेकर अद्भुत शोध!

दुःख में रोज़ प्रश्न उठ्ता कि, 'मेरे साथ ही ऐसा क्यों';
लेकिन कर विचार मानव, सुख से तुने कभी पूछा, 'ऐसा क्यों'?

'भूगते उसकी भूल' समझकर, रहना सदा तू स्थिर;
शिकायतें फिर नहीं रहेंगी, तब बनेगा तू सच्चा 'वीर'!

हों चाहे कृष्ण-अर्जुन या फिर गौतम स्वामी और महावीर;
अंतिम विज्ञान के परिप्रश्न ,मोक्ष के काज बनाए अधीर!

दादा कहें, प्रश्नों द्वारा, पाया ऐसा गीता-सार;
मोक्ष तक पहुँचाए, करके पूरा संसार पार!

दादा के युवाओं द्वारा

मई 2021
वर्ष : 9, अंक : 1
अखंड क्रमांक : 97

प्रश्न क्यों पूछने चाहिए?
कैसे प्रश्न पूछने चाहिए?
किससे प्रश्न पूछने चाहिए?

किस तरह से पूछने चाहिए ताकि विवेक चुक न जाएँ, इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.